ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -2| July - Dec 2025

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 173-181

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

दीपक कुमार गौतम
शोधकर्ता
शिक्षण प्रशिक्षण विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत
ईमेल : deepakkumargautam30@gmail.com
प्रो. (डॉ.) तिर्मल सिंह
प्रोफेसर–सह–शोध निर्देशक
शिक्षण प्रशिक्षण विभाग
श्री जयनारायण पी.जी. कॉलेज
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध–सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र मऊ जनपद के माध्यमिक स्तर के विघार्थियो के परिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। अध्ययन के पता चलता है कि पारिवारिक वातावरण और शौक्षिक उपलब्धि के बीच एक मजबूत सकरात्मक सम्बन्ध पाया जाता है और उच्च मध्य और निम्मन पारिवारिक वातावरण वाले विधाथियों को शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अन्तर होता है। मऊ मे सरकारी स्कूलो के बुनियादी ढ़ॉचे मे सुधार के बावजूद निजी स्कूलो मे दाखिले की प्रवृति अभी भी बनी हुई है। यह विरोधाभाश दर्शाता है कि शैक्षिक सफलता सिर्फ भौतिक संसाधानों पर निर्भर नही करती बल्कि परिवार के भावनात्मक समर्थन और पूँजी पर भी निर्भर करती है शैक्षिक विकास के लिए परिवार, शिक्षक और निति निर्माताओं के बीच सहयोग की आवश्यकता पर बल देती है।

मुख्य बिन्दु : माध्यमिक स्तर , पारिवारिक वातावरण , शैक्षिक उपलब्धि

1.1 प्रस्तावना : शिक्षा को व्यक्ति के सर्वागीण की एक सतत प्रक्रिया माना जाता है। जिसमे उसका शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चरित्रिक और संवेगात्मक विकास सम्मिलित होता है। इस विकास की नीव परिवार मे रखी जाती है। जिसे बच्चे की पहली पाठशाला कहा जाता है । मॉ को बच्चे की प्रथम शिक्षिका माना गया है जो उसमे सर्वप्रथम भाशा ज्ञान और शिक्षा के प्रति रूचि उत्तपन्न करती है। परिवार के सदस्यों द्धारा दिया जाने वाला प्रोत्साहन और भावनात्मक लगाव बच्चे के ज्ञान मे वृद्धि करता है। जिससे उसका मानसिक विकास होता है। यह प्राथमिक परिवेश व्यक्ति की शैक्षिक अभिरूचि के साथ साथ उसके व्यक्त्वि निर्माण मे भी सहयोग प्रदान करती है।

शैक्षिक उपलब्धि एक महत्वपुर्ण मापदण्ड है जो किसी विशय या पाठयक्रम मे अर्जित ज्ञान और कौशल के स्तर को मापता है। यह व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता का एक महत्वपूर्ण सकेंतक है और उसके भविश्य के लिए एक महत्वपुर्ण कारक बन गया है। जबकि शैक्षिक सफलता अक्सर विधालयों पर केन्द्रित होती है यह समझना महत्वपूर्ण है कि इसकी नीव परिवार के भीतर रखी जाती है। परिवार बच्चे के लिए एक ''सुक्ष्ममडल'' (Microsystem) के रूप में कार्य करता है जो उसके विकास के लिए आवश्यक प्रत्यक्ष और द्विदिशात्मक संपर्क प्रदान करता है। यह प्रांरभिक और गहन प्रभाव ब्रोफेब्रेनर के परिस्थितिक तंत्र सिद्धान्त के लिए आधार तैयार करता है। जिसे हम इस रिपोर्ट मे आगे विस्तृत रूप से देखेगे।

1.2 समस्या कथन :–

''माध्यमिक स्तर के विधार्थियो के परिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

1.3 शोध का उदेश्यः–

इस सोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विधार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का गहन अध्ययन करना है। इसके निम्मनलिखित उद्श्य है।

1. परिवारिक वातावरण के उच्च मध्य और निम्न स्तरों के बीच विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मे पाए जाने वाले सार्थक अंतर का मूल्यांकन करना ।

2. मऊ जनपद के स्थानीय संदर्भ मे सरकारी (परिशदीय) और नीजी विघालयों के विधार्थियो के शैक्षिक प्रर्दश्न का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.4 मुख्य पद और उनकी परिभाशाएँ

- **माध्यमिक स्तर के विधार्थियो**

इस अध्ययन मे कक्षा 11वी और 12वी के छात्रों पर विशेश ध्यान केन्द्रित किया जायेगा । ये वर्श विधाथियों के शैक्षिक जीवन मे एक महत्वपूर्ण मोड़ होते है जहॉ परिवार के प्रभाव और बाहरी दु**निया के समायोजंन की चुनौतियॉ सबसे अधिक प्रसांगिक होती है।**

✷ **परिवारिक वातावरण**

इसका तात्पर्य उस भौतिक, जौविक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक परिवेश से है जो परिवार के सदस्यो के बीच साझा होता है एक स्वस्थ पारिवारिक वातावरण मे स्नेह, सहयोग, प्रसन्नता, लोकतात्रिकता, स्वतंत्रता और भागिदारी जैसे गुण शामिल होते है जो बालक के सर्वागीण विकास में सहायक होते है।

✷ **शैक्षिक उपलब्धि**

इसमे एक विशय या पाठ्यक्रम मे बालक के अर्जित ज्ञान और कौशल के स्तर के रूप मे परिभाशित किया गया है इसमे आमतौर पर वार्षिक परिक्षाओ मे प्राप्त ग्रेड परिक्षा अंक या सतत मूल्यांकन के माध्यम से मापा जाता है। यह विधार्थियो की बौद्धिक योग्यताओ और अध्ययन आदतो का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

2.1 पूर्व शोध निश्कर्शों की समीक्षा :

सकारात्मक सहसंबंध

पारिवारिक वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि के बीच एक मजबूत और धनात्मक सहसंबंध पाया गया है। शोध से यह स्पश्ट होता है कि जिस परिवार मे प्रेंम, सहयोग और प्रजातंत्र की भावना पाई जाती है, उस परिवार के बच्चो बाहरी वातावरण के साथ अधिक सरलता से समयोजन स्थापित कर पाते हैं।

अध्ययनों ने इस बात की पुश्टि की है कि उच्च, माध्यम और निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अंतर पाया गया है। उच्च पारिवारिक वातावरण के विद्यार्थियो का प्रदर्शन निम्न वातावरण के विद्यार्थियो की तुलना में स्पश्ट रूप से बेहतर पाया गया है । परिवार के सदस्यों का बच्चो प्रोत्साहित करना और उनके शैक्षिक प्रयासों ने सक्रिय रूप से शामिल होना उनकी प्रेरणा और प्रदर्शन को बढ़ाता है।

2.3 विरोधाभासी और सूक्ष्य निश्कर्शों की चर्चा

हालाकि अधिकांश शोध एक सकारात्मक संबंध को दर्शातें है, कुछ अध्ययनों मे विरोधाभासी निश्कर्श भी प्रस्तुत किए हैं, जिनमे यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है। यह विरोधाभास इस तथ्य से उत्पन्न होता है कि पारिवारिक वातावरण एक बहुआयामी कारक है, और इसका प्रभाव अध्ययन के नमूने, मापी गई विशिश्ट मापदंडो और उपयोग की गयी शोध पद्धति पर निर्भर करता है उदाहरण के लिए कुछ अध्ययन केवल आर्थिक स्थिति पर ध्यान केन्द्रित करते है, जबकि अन्य भावनात्मक और सामाजिक संबंधो को भी शामिल करते है यह दर्शाता है कि शैक्षिक व पारिवारिक वातावरण का प्रभाव सर्वव्यापी नही है और यह विशिश्ट संदर्भो और कारकों पर निर्भर करता है।

इसके अतिरिक्त, पारिवारिक वातावरण के कुछ पहलू ऐसे भी हो सकते हैं जो नाकारात्मक प्रभाव डालते है। अत्यधिक लाड़–प्यार या अत्यधिक स्वतंत्रता बच्चों को अपनी हर जरूरत के लिए माता–पिता पर आश्रित बना सकती है, या उन्हें शिक्षा के प्रति लापरवाह कर सकती है । यह दिखाता है एक सरल 'अच्छे' और 'बुरे' वातावरण से परे एक जटिल कारण–प्रभाव संबंध मौजूद है। परिवार को बच्चों की क्षमताओ को समझना चाहिए उन पर अत्यधिक अपेक्षाओं का बोझ नही डालना चाहिए और उन्हें अपना विकास करने का पूर्ण अवसर देना चाहिए

मऊ जनपदः स्थानीय संदर्भ का विश्लेशण

3.1 जनपद मऊः जनसंख्यिकी और आक्षरता प्रोफाइल

अध्ययन का केंन्द्र बिंदु, जनपद मऊ, एक विशिश्ट जनसंख्यिकीय प्रोफाइल प्रस्तुत करता है। 2011 की जनगणना के अनुसार, जिले की कुल जनसंख्या जगभग 22.05 लाख (2,205,968) है, जिसमें से 11.14 लाख पुरूश और 10.91 लाख महिलाएँ हैं। जिले की समग्र साक्षरता दर 73.09% है, जो राष्ट्रीय ओसत से अधिक है

महत्वपूर्ण अवलोकन पुरूष और महिला साक्षरता के बीच का अंतर है। पुरूष साक्षरता 82.45% है, जबकि महिला साक्षरता 63.63% है। यह अंतर शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है । यह लैंगिक–विषष्ट शैक्षिक उपलब्धि की पड़ताल के लिए एक महत्वपूर्ण कारक भी हो सकता है, क्योंकि कम साक्षरता दर वाली माताओं का बच्चों की शैक्षिक प्रगति में भागीदारी कम हो सकती है।

सारणी 1 : जनपद मऊ की प्रमुख जनसांख्यिकी और शैक्षिक सांख्यिकी (2011 जनगणना)

विवरण	संाख्यिकी
कुल आबादी	22,05,968[30]
पुरूश आबादी	11,14,709[30]

महिला आबादी	$10,91,259^{30}$
कुल साक्षरता दर	$73.09\%^{30}$
पुरूष साक्षरता दर	$82.45\%^{30}$
महिला साक्षरता दर	$63.63\%^{30}$
धनत्व (प्रति वर्ग किमी)	$1,288^{31}$
लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरूष)	979^{30}

3.2 शैक्षिक बुनियादी ढाँचा चुनौतियाँ

मऊ जनपद मे शैक्षिक बुनियादी ढाँचे को मजबुत बनाने का प्रयास किया जा रहा है जिले मे मुख्यमंत्री मॉडल अभ्युदय कंपोजिट विद्यालय जैसे अत्य आधुनिक सुविधाओं से लैस सरकारी स्कूलो का निर्माण किया जा रहा है जिसमे स्मार्ट क्लास, डिजिटल एजुकेशन की व्यवस्था होगी। इसके अतिरिक्त जिले का मुख्य विकास अधिकारी (CDO) ने बताया की ऑपरेशन कायाकल्प और निपुण भारत मिशन के तहत मऊ के सरकारी स्कूल के 19 मानदडों पर 100% अनुपालन हासिल कर लिया है। इन प्रयासो का उद्देश्य निजी स्कूल से बेहतर सुविधाएँ प्रदान करना है हालांकि कुछ रिपोर्ट से पता चलता है की सरकारी स्कूल मे प्रवेश दर मे गिरावत आई है जिसके कारण 10 हजार से अधिक स्कूलो के आस–पास स्कूलो मे विलय करने की नीति लागू करनी पड़ी है।

4.1 शोध की रूपरेखा

यह एक सर्वेक्षण आधारित सहसंबंधात्मक अध्ययन है जिसमे के स्टडी दृश्टिकोण के तत्वो को भी शामिल किया गया है सर्वेक्षण पद्धिति एक बड़े नमूने डेटा एकत्र करने और परिणामों की सामान्यीकरण करने की अनुमति देती है। इसके साथ ही कुछ चुनिदा परिवारो पर के स्टडी का उपयोग यह समझने के लिए गहन गुणात्मक जानकारी प्रदान करेगा कि कैसे विशिश्ट परिवारिक कारण शैक्षिक परिणामो को प्रभावित करते है।

4.2 उपकरण :

पारिवारिक वातावरण मापन करने के लिए मूस और मूस $(Moos\ and\ moos)$ निर्मित पारिवारिक वातावरण मापनी का उपयोग किया जायेगा यह एक व्यापक उपकरण है। जो पारिवारिक वातावरण को केवल सामाजिक–आर्थिक स्थिति तक सीमित न रखते हुए इसके बहुआयामी चारित्र को मापता है। यह मापती दर्शाती है कि पारिवारिक वातावरण केवल भौतिक संसाधनों से कही अधिक है और इसके भावनात्मक बौद्धिक और संस्कृतिक कारक भी शामिल है

4.3 शैक्षिक उपलब्धि का मापनः

शैक्षिक उपलब्धि को विद्यार्थियो के वार्शिक परीक्षा परिणामों (प्राप्तांक) और विद्यालय द्धारा किया गए सतत मूल्यॉकन (CCE) के माध्यम से मापा जायेगा राश्ट्रीय मात्रात्मक प्रदर्शन के बजाय बच्चे के समग्र विकासात्मक पहलुओ का आकलन करती है

5.2 पारिवारिक वातावरण के स्तरो के बीच सार्थक अन्तर

अध्ययन के परिणामों से स्पश्ट उच्च और निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि मे एक सार्थक अंतर मौजूद है

सारणी 2– उच्च मध्यम और निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यर्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान $(mean)$ और t मान कर तुलनात्मक विशलेशण

तुलनात्मक समूह	मध्यमान मे अंतर	t माान
उच्च बनाम मध्यमान	9.80	सार्थक (0.01 स्तर पर)
उच्च बनाम निम्मन	17.03	सार्थक (0.01 स्तर पर)
मध्यमान बनाम निम्न	9.62	सार्थक (0.01 स्तर पर)

जैसा की सरणी 2 मे दर्शाया गया है उच्च पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि निम्मन पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियो की तुलना मे काफी

अधिक पाई गयी है। यह स्पश्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि शैक्षिक उपलब्धि की असमानता सीधे रूप से प्रदर्शित करता है कि शैक्षिक उपलब्धि की असमानता सीधे तौर पर पारिवारिक पृश्टभूमि से जुड़ी हुई है उच्च और मध्य वातावरण के बीच सार्थक अन्तर पाया गया जैसे कि मध्य और निम्न वातावरण के बीच भी देखा गया है ये निश्कर्श बताते है कि पारिवारिक वातावरण को हर स्तर शैक्षिक परिणाम मे एक महत्वपुर्ण भूमिका निभाता है।

6.2 भविष्य मे शोध हेतु सुक्षाव :–

अभिभावाको के लिए सुझाव : बच्चो के साथ भावनात्मक जुड़ाव खुली बात–चीत को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे वे बिना किसी झिझक के अपनी बाते कह सके अत्यधिक लाड प्यार अत्यधिक स्वतंत्रता से बचना चाहिए क्योकि यह दोनो ही स्थितियॉ बच्चों के शैक्षिक विकास के लिए हानिकारक हो सकती है।

शिक्षको के लिए सुझाव : शिक्षक को कक्षामे एक सहायक और शिक्षको के लिए सुझाव : शिक्षक को कक्षा मे एक सहायक और आकर्शक सीखने का महौल बनाना चाहिए और बच्चों के पारिवारिक महौल को समझने का प्रयास करना चाहिए अभिभावको के साथ मजबूत सबंध स्थापित करना महत्वपूर्ण है जिससे बच्चो के शिक्षा मे सुधार हो सके

6.3 भविष्य मे शोध की दिशाः

1 मऊ के सरकारी स्कूलो मे शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले विशिष्ट कारणों का पता लगाने के लिए गुणात्मक शोध जैसे (केस स्टडी) किया जा सके । ताकि उन कारकों को अन्य क्षेत्रो मे भी लागू किया जा सके

2 पारिवार के भीतर लैगिक असमान्ता और इसका शैक्षिक परिणामो पर पड़ने वाले प्रभाव का गहन अध्ययन किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष :– यह शोध पत्र इस बात की पुश्टि करता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का एक महत्वपुर्ण और

साकारात्मक प्रभाव पड़ता है यह अध्ययन पांरपरिक धारणाओ को चुनौति देता है और शिक्षा निति और अभ्यास के लिए महत्वपुर्ण निहितार्थ प्रदान करता है। विशेश रूप मऊ जैसे विशिश्ट भौगोलिक संदर्भो मे।

अध्ययन के निश्कर्शो से यह स्पश्ट होता है कि उच्च पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियो की तुलना मे स्पष्ट रूप से अधिक होती है इसके जनपद मऊ मे शिक्षा के बुनियादि ढॉचो मे सुधार के प्रयासो के बावजूत निजी विद्यालयो के प्रति रूझान अभी भी बना हुआ है

संन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

01 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का मूल्यॉकन

02 वरिष्ट माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के पारिवारिक सम्बन्ध का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

03 गुप्ता प्रोफेसर एस0पी0 एव गुप्ता डॉ अल्का उच्चतर शिक्षा मनो विज्ञान शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद

04 डा0 अरूण कुमार शिक्षा मनोविज्ञान मोतिलाल बनारसी दास वाराणसी

05 बीएड स्तर के विद्यार्थियो की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

06 भटनागर ए0वी0 एवं भटनागर मीनाक्षी (2000) शिक्षण अधिगम मनोविज्ञान